ISSN : 2249-9318
Peer-Reviewed and Refereed Research Journal
UGC Approved Journal No: 41369

अनुसंधान

(छायावाद पर केन्द्रित अंक)

वर्ष : 16 अंक : 15-16 जनवरी-दिसम्बर, 2020

संस्थापक
प्रो. धीरेन्द्र वर्मा
प्रधान सम्पादक
प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी

सम्पादक
डॉ. राजेश कुमार गर्ग

सम्पादन सहयोग
डॉ. बिजय कुमार रबिदास, डॉ. सुरभि त्रिपाठी, डॉ. जनार्दन, डॉ. शिवकुमार यादव

प्रकाशक
अनुसंधान समिति
हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

14. **तुलनात्मक झरोके से छायावाद और भावकविता : एक विहंगम दृष्टि** 115
डॉ. वी. जगन्नाथ रेड्डी
सहआचार्य, हिंदी विभाग, अण्णामलै विश्वविद्यालय
तमिलनाडु

15. **तेलुगु साहित्य में छायावाद (भाववाद- कविता)** 121
डॉ. गाजुला राजू
सहायक आचार्य, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
उत्तर प्रदेश

16. **छायावादी कवि चतुष्टय की आलोचना की कतिपय विशिष्टताएँ** 128
(निराला के विशेष संदर्भ में)
डॉ. जगदीश भगत
हिंदी भवन, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, वीरभूमि, पश्चिम बंगाल

17. **छायावादी कवियों की नारी चेतना** 136
डॉ. समीक्षा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी, बैजनाथ पाण्डेय आर्य संस्कृत महाविद्यालय, सिवान
बिहार

18. **छायावादी काव्य और निराला** 146
डॉ. माया प्रकाश पाण्डेय
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, कला संकाय, महाराजा सजाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा
गुजरात

19. **छायावाद में क्रांति का स्वरूप और निराला** 153
डॉ. पोर्शिया सरकार
सहायक अध्यापिका, हिंदी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज, पुरुलिया
पश्चिम बंगाल

20. **निराला की स्वाधीनता सम्बन्धी अवधारणा और उनकी सामाजिक दृष्टि** 15
डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर
छत्तीसगढ़

छायावाद में क्रांति का स्वरूप और निराला

डॉ. पोर्शिया सरकार*

क्रांति और संघर्ष से मानव सभ्यता का रिश्ता बहुत पुराना है। सभ्यता के प्रारंभ से लेकर अब तक उसने जितने भी पड़ाव पार किए उसके पीछे की कहानी कहीं न कहीं क्रांति और संघर्ष से जुड़ी हुई है। पूरे विश्व में जितने भी बदलाव और परिवर्तन हुए हैं उसके पीछे क्रांति और संघर्ष का हाथ है। विश्व के हरेक कला और साहित्य का सृजन इन्हीं की देन है। समय-समय में जितने भी संत, योगी, चिंतक, कवि, साहित्यकार और कलाकार हुए हैं उनका जीवन आदर्श भी इसकी स्याही से लिखी गई है।

हिन्दी साहित्य का सम्पूर्ण इतिहास भी इन्ही संघर्षों का लेखा-जोखा है। मनुष्य अपनी सभी जीवनानुभूतियों को साहित्य में प्रकाशित करता जाता है। वह अपने आसपास की परिस्थिति, परिवेश और विसंगतियों से ही नवीन प्रेरणा ग्रहण करता है। चाहे वह आदि कवि वाल्मीकी हो या अन्य कवि। साहित्य और कला में इसी क्रांति और संघर्ष की गूंज सुनाई पड़ती है। इसी क्रम में हिन्दी साहित्य को अगर लिया जाए तो हमें पता चलेगा कि प्राचीनकाल से लेकर आधुनिककाल तक अनगिनत क्रांतिकारी कवियों ने अपने हुंकारों से साहित्य के पन्नों को भर दिया। चाहे वह कवि चंद हो या भूषण, कबीर हो या निराला। हिन्दी साहित्य के प्रत्येक काल की शुरुआत इसी विद्रोह से हुई है। और अगर छायावाद की बात करें तो पाएंगे कि प्राचीन बंधनों को काटकर नवीनता की और बढ़ना और स्थूलता के स्थान पर सूक्ष्मता की स्थापना करना ही इस काल का लक्ष्य रहा। इस काल में क्रांति और संघर्ष की बात की जाए तो निराला के बिना अधूरा सा लगेगा। इसी प्रसंग में युगांतकारी कवि निराला को अगर देखें तो पाएंगे उनका संपूर्ण जीवन ही संघर्षों से जूझते हुए बीता। उन्हें जीवनभर विरोधों और विवादों का सामना करना पड़ा। वे हिन्दी के ऐसे बिरले कवियों में से एक है जिन्हें आजीवन आर्थिक तंगी, ठोकरे और अवहेलना मिली। इसलिए वे तत्कालीन समाज में व्याप्त शोषण, दमन असमानता, अज्ञानता एवं रूढ़िवादिता को देखकर भी अनदेखा नहीं कर सके। उनके साहित्य में भी यही मुखरित हुआ है। वे सन् 1916 से 1953 ई. तक निरंतर साहित्य में लीन रहे। उनकी कुछ छायावादी रचनाएँ अनामिका, परिमल, गीतिका और तुलसीदास है। हिन्दी साहित्य में निराला को एक ऐसे कवि के रूप में माना जाता है जिन्होंने साहित्य में कदम ही रखा विद्रोह और क्रांति के साथ। इसका अच्छा खासा उदाहरण सन् 1916 ई. में प्रकाशित 'जुही की कली' कविता है। उन्होंने काव्य के बंधनों को ही नहीं तोड़ा बल्कि समाज के रूढ़िगत बंधनों से भी समाज को मुक्त करने का प्रयास किया। उनके काव्य के विषय भी अनेक रूपता लिए हुए हैं। उनके काव्य में कही उमड़-घुमड़ कर गरजता हुआ बादल है तो कहीं विधवा और भिक्षुकों के बच्चों का क्रंदन है। एक ओर अनके काव्य में विद्रोह की आग है तो दूसरी ओर नारी के अद्वितीय सौंदर्य की झांकी। परन्तु अपनी कविताओं के माध्यम से वर्गीय शोषण, सामाजिक वैशम्य और राजनैतिक स्वार्थपरता के विरुद्ध पचंड विद्रोह करना ही उनका सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य रहा। इसी प्रसंग में डॉ.नरेन्द्र द्वारा संपादित 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' पुस्तक में उनके कथन को देखा जा सकता है। वे लिखते है-''जैसे-जैसे युग बदलता है, कवि

---

* *सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल*

डाक-पंजीयन म.प्र./भोपाल/4-472/2021-23
पोस्टिंग दिनांक : प्रतिमाह दिनांक 2 से 3, पृष्ठ सं. 112
प्रकाशन दिनांक : 1 से 1 प्रतिमाह

आर.एन.आई क्र. : 38470/83
आई.एस.एस.एन. क्र. : 2456-7167

मूल्य 25/-

39 वाँ वर्ष

मई 2021

अक्षरा

194

साहित्य की मासिकी

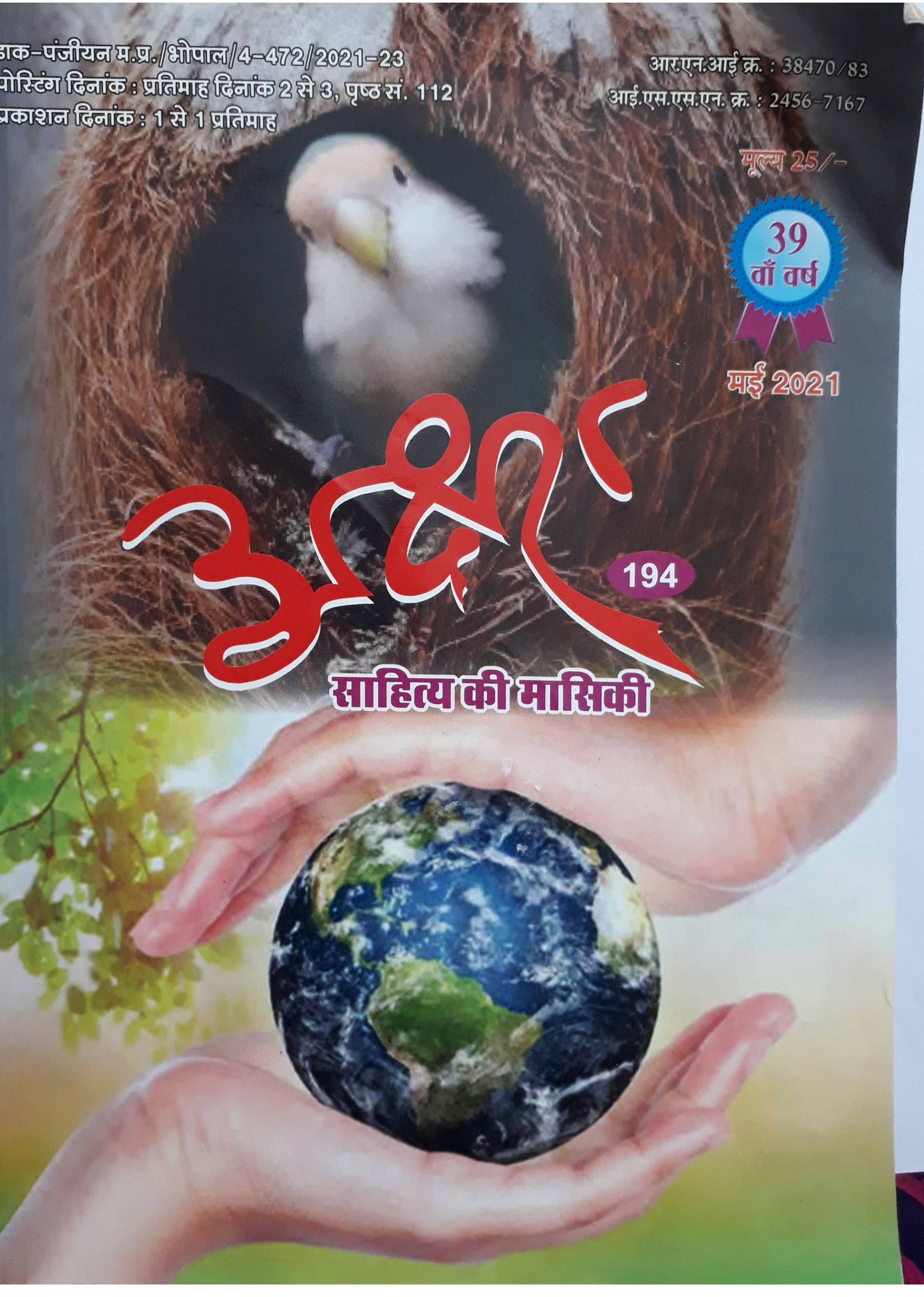

हास्य-व्यंग्य और रेणु का कथेतर साहित्य

- पोर्शिया सरकार

जन्म - 18 जून 1978।

शिक्षा - एम.ए., पीएच.डी।

रचनाएँ - एक पुस्तक प्रकाशित।

रेणु एक ऐसे कथाकार हैं, जिनको अपनी रचनाओं में अपने समय की नब्ज को पकड़ने की अनोखी ताकत है। उनका कथेतर साहित्य तत्कालीन जीवन संघर्ष, दुःख, द्वंद्व, संकटबोध और तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों को प्रकट करते हुए भी आज अप्रासंगिक नहीं है। कथेतर विधाओं में रेणु अपनी गहन अनुभूतियों के जरिए इतिहासबोध तक जाते हैं। रेणु के कथेतर साहित्य में वर्णित समय-समाज एक सम्पूर्ण युगबोध है।

जब हम फणीश्वरनाथ रेणु का नाम लेते हैं, तो हमारे मन में 'मैला आँचल' या 'परती परिकथा' या फिर 'तीसरी कसम' की याद आने लगती है। वे एक ऐसे कथा-शिल्पी हैं, जिन्होंने सफेद कागज के टुकड़ों पर मानवीय संवेदनाओं को साकार किया है। उनका सम्पूर्ण साहित्य सत्यानुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति है। रेणु का कथा साहित्य अमर है और कथेतर साहित्य अद्वितीय। उन्होंने रिपोर्ताज, रपट, संस्मरण, रेखाचित्र, साक्षात्कार, पत्र, निबंध, हास्य-व्यंग्य, कविता, गद्यगीत आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं में लेखन-कार्य किया है। हिन्दी जगत में इतनी सारी साहित्यिक विधाओं में लिखनेवाले साहित्यकार विरल ही हैं।

रेणु के कथेतर साहित्य में हास्य-व्यंग्य की चर्चा करने से पहले हमें इतिहास जानना होगा। हास्य-व्यंग्य की शुरुआत कब से साहित्य में हुई, यह बताना कठिन है, पर सरल भाषा में कहा जा सकता है कि यह शब्द का वह गूढ़ अर्थ है, जो उसकी व्यंजना शक्ति के द्वारा प्रकट होता है। प्राचीन काल से लेकर अब तक विभिन्न विधाओं के जरिए कवियों ने हास्य-व्यंग्य को प्रस्तुत किया है। संस्कृत वाङ्मय में भी कई कविताओं में इसे देखा जा सकता है।

हास्य-व्यंग्य के मूल स्रोत को अगर हम देखने की कोशिश करेंगे, तो हमें पता चलेगा कि इसकी परम्परा काफी पुरानी है। यह हमारी संस्कृति, सभ्यता और जीवन दर्शन में रचा-बसा है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही जन्म, मृत्यु, प्रकृति और मानव मात्र की समस्त सूक्ष्म अनुभूतियों को महत्ता प्रदान की गई है। भारतीय संस्कृति प्रकृति के कण-कण में व्याप्त आनंद और रस की फुहार को ही नाना रूपों में साहित्य और कला के जरिए प्रस्तुत करती है।

भारत में हर उत्सव, पूजा-पाठ, अनुष्ठान आदि सुख, शांति और समृद्धि के लिए मनाए जाते हैं। उत्सव हमारे आनंद के प्रतीक हैं। अक्सर इसी की छाया साहित्य में पड़ने पर हास्य का जन्म होता है, परन्तु आधुनिक काल तक आते-आते हास्य के क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। भारतीय विद्वानों ने इसे एक स्वतंत्र विधा न मानकर सभी साहित्यिक विधाओं में व्याप्त रहनेवाला रस माना है और यह भी माना है कि हास्य और व्यंग्य दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं। इस मत का

Reg. No. 694/2009-10

Impact Factor : 5.029 ISSN : 2250-1193

Anukriti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 3 Year-10 March, 2020

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief

Prof. Vijay Bahadur Singh
Hindi Department
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor

Dr. Ramsudhar Singh
Ex Head, Department of Hindi
Udai Pratap Autonomous College
Varanasi

Published by

SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI (U.P.), INDIA
Mob. 9415388337, **E-mail :** anukriti193@rediffmail.com, **Website :** anukritijournals.com

अनुक्रमणिका

1	ज्योतिषशास्त्र में रोग एवं उपचार विचार **मनीष कुमार त्रिपाठी**	1-8
	भारतीयता के संवाहक : रवीन्द्रनाथ ठाकुर **डॉ0 बृजेश कुमार**	9-10
	प्रवासी साहित्य में स्त्री लेखिकाओं की भूमिका **अजीत कुमार सिंह**	11-16
	लोकव्यवहार ज्ञान की दृष्टि से संस्कृत साहित्य का मूल्यांकन **डॉ0 पी0के0 पाण्डा**	17-20
	बाल श्रमिकों की स्वास्थ्य समस्यायें **डॉ0 नीतू झा**	21-26
	Coping Strategies and Stress among Nurses **Dr. Jyoti Kumari**	27-31
	Effect of Television on Children's Academic Achievement **Dr. Sarika**	32-34
	पाणिनि और वैदिक व्याकरण **दुर्गेश कुमार राय**	35-38
	रेणु के रिपोर्ताज में राजनैतिक चेतना **डॉ0 पोर्शिया सरकार**	39-41
	भारत की अर्थव्यवस्था पर कोरोना संकट का प्रभाव **राकेश कुमार वर्मा**	42-46
	विनोद कुमार शुक्ल का कहानी संग्रह 'महाविद्यालय' में शिल्पगत नवाचार **अवनीश कुमार मिश्र**	47-48
	हिन्दी दलित साहित्य : आशय एवं अवधारणा **डॉ0 यशवंत वीरोदय**	49-54
	ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में पोषण की आवश्यकता **डॉ० अन्नु कुमारी**	55-60
	इतिहास में शोध की प्रवृत्ति **डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डेय**	61-64
	श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज **रुचिका पाण्डेय**	65-68
	नगरीय व्यावसायिक स्वरूप : अहरौरा नगर (जनपद मीरजापुर उत्तर प्रदेश) पर आधारित एक भौगोलिक अध्ययन **डॉ० मनोज कुमार पाण्डेय**	69-73
	हिन्दी कथा–साहित्य को अज्ञेय की देन **प्रिया सिंह**	74-76

Reg. No. 694/2009-10
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 10, No. 3, March, 2020 Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

रेणु के रिपोर्ताज में राजनैतिक चेतना

डॉ0 पोर्शिया सरकार
सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज, पुरुलिया

रेणु के सम्पूर्ण कथेतर साहित्य की बात करें तो उन्होंने गद्य की प्रत्येक विधा में अपनी लेखनी चलाई है। उनके द्वारा लिखे गए रिपोर्ताज अपने आप में बेजोड़ हैं। उदाहरण के तौर पर 'विदापत नाच', 'हड्डियों का पुल', 'नए सवेरे की आशा', 'एकलव्य के नोट्स', 'पुरानी कहानी : नया पाठ', 'भूमिदर्शन की भूमिका', 'पटना जल प्रलय', 'सरहद के उस पार' आदि। ये सारे रिपोर्ताज विभिन्न विषय वस्तुओं को समेटे हुए हैं, लेकिन इनके केन्द्र में आम इंसान है, जो शोषित और अवहेलित है।

रेणु द्वारा रचित सत्रह रिपोर्ताज आज उपलब्ध हैं। रिपोर्ताजों का संबंध समाज और जीवन के विविध पक्षों से है। इनमें रेणु के समय के जन की आशा, आकांक्षा, संघर्ष, आस्था–अनास्था का चित्रण किया गया है। उनका पहला रिपोर्ताज सन् 1945 में प्रकाशित हुआ और अन्तिम सन् 1975 में। 31 वर्षों में लिखे गए रेणु के रिपोर्ताज मानव के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं से संबद्ध हैं। रेणु के कई रिपोर्ताज भारतीय राजनैतिक परिवेश का दस्तावेज हैं। मात्र भारतीय कहना गलत होगा क्योंकि उन्होंने बंग्लादेश और नेपाल की राजनीति का भी बारीकी से निरीक्षण किया है। रेणु ने अनेक राजनैतिक दलों का चित्रण किया है, जिसमें कांग्रेस, हिन्दू महासभा और समाजवादी दल भी हैं। इन सभी दलों के कार्यकलापों का बिना किसी पूर्वाग्रह के उन्होंने चित्रण किया है।

रेणु आजीवन राजनीति से जुड़े रहे। वे स्वीकारते हैं–''जीवन की शुरूआत राजनीति से की थी मैंने, अथवा किसी 'नीति' से, कह नहीं सकता, मगर राजनीति हमारे लिए 'दाल–भात' की तरह है।'' वास्तव में उनके लिए राजनीति एक माध्यम था मजदूरों, कृशकों एवं गरीबों को उनका अधिकार दिलाने का। चाहे वह किसान आन्दोलन, काश्त संघर्ष तथा मील–मजदूरों की हड़ताल ही क्यों न हो, उन्होंने लोगों का साथ दिया। उन्होंने सन् 1952 तक सक्रिय राजनीति की थी। इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली, परन्तु राजनीति को उन्होंने अपने से अलग नहीं होने दिया। साथ ही साथ उन्होंने संघर्श के दौरान किए गए अनुभवों को अपने रिपोर्ताज में लिपिबद्ध किया। उनके अधिकांश रिपोर्ताज जो कि खासतौर पर सूखे और बाढ़ पर केन्द्रित हैं, उनमें भी तत्कालीन राजनेताओं के गतिविधियों को देखा जा सकता है। रेणु के अधिकांश रिपोर्ताज विभिन्न पार्टियों की 'राजनीति' या यूँ कह सकते हैं 'स्वार्थपरता' को दर्शाता है।

स्वतंत्रता–पूर्व भारतीयों ने जिस सुख एवं समृद्धि का सपना देखा था, उसे आजादी के पश्चात् शक्तिशाली और अवसरवादी राजनेताओं ने चकनाचूर कर दिया। जिसके कारण जनता का नेताओं से मोह भंग हो गया। रेणु ने अपने रिपोर्ताजों में नेताओं के झूठे वादे और वोट की माँग पर भी व्यंग्य किया है। नेता चुनाव–पूर्व इन्कलाब का झूठा स्वप्न दिखाकर गरीब जनता को ठगते हैं। जैसे ही इन्हें वोट मिल जाता है, ये अपनी ही तिजोरियों को भरने लगते हैं। यानी इनके 'नाम बड़े पर दर्शन छोटे' होते हैं। जनता भी नेताओं को पहचानने लगी। जनता को आजादी झूठी लगती है। वह रंगे सियारों को पहचानने लगी है। वह जानती है कि राजनीतिज्ञ ही उनकी जिन्दगी में समस्याओं को जन्म देने का कार्य कर रहे हैं।

रेणु ने अपने रिपोर्ताजों में भ्रष्टाचार में लिप्त कांग्रेसी सरकार के चट्टे–बट्टों को बेनकाब किया है। वे राजनीति और उससे जुड़े लोगों के हर तरह के पैंतरे से परिचित हैं। वे राजनीतिज्ञों और जमींदारों के गठबंधन को भी देखते हैं। यह गठबंधन किसानों के लिए घातक है।

रेणु का राजनीतिक कदम केवल अपने देश और अपने क्षेत्र विशेश तक सीमाबद्ध नहीं था। उन्होंने अपने देश ही नहीं संपूर्ण विश्व–मानव समाज के शोशक वर्ग के खिलाफ आवाज उठाया है। वे भारत के साथ नेपाल, बांग्लादेश यहाँ तक की चीन की जनता के दुःख–दर्द के साथ जुड़े हुए थे।

'हड्डियों का पुल' रिपोर्ताज में रेणु ने बिहार के सूखाग्रस्त इलाके का वर्णन किया है, जहाँ लोग सारूख और करमी पर ही जीवित रहते हैं, पर जमींदारों एवं साहूकारों का शोषण–चक्र अपनी पूरी शक्ति से घूमता है। सरकार भी इनसे मिली हुई। भारतीय समाज आज जिस शोशण और बदहाली का शिकार है उसके लिए जिम्मेदार भारतीय शासन व्यवस्था है। रेणु ने लगभग अधिकांश रिपोर्ताज में मानव–विद्रोह को किसी न किसी रूप में दर्शाया है। रेणु क्रांति की आवश्यकता को हर क्षेत्र में महसूस करते हैं। सही अर्थों में राजनीतिक सुधार ही जीवन के हरेक क्षेत्र में इन्कलाब की शुरूआत है।

JOURNAL FOR SOCIAL REALITY

Quarterly (English & Hindi)
ISSN 2349 - 9710
Vol. 7 Oct. - Dec., 2020 No. 4

Editor
Dr. Sachidanand Prasad
Associate Professor, Head, Dept. of Philosophy,
R.R.S. College, Mokama, Patna, Bihar

Institute for Social Development & Research
Gari Hotwar, Ranchi - 835217 (Jharkhand)

No. 4
ISSN 2349-9710, Peer Reviewed Journal, JSR, Vol. 7(4), 2020, ISDR, Ranchi.

रेणु के रिपोर्ताज 'बिदापत-नाच' में दलित समाज

डॉ. पोर्शिया सरकार
सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज, पुरूलिया, पश्चिम बंगाल

जब हम फणीश्वर नाथ 'रेणु' का नाम लेते हैं, तो हमारे मन में 'मैला आँचल' या 'परती परिकथा' या फिर 'तीसरी कसम' की याद आने लगती है। बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने बहुत समृद्ध कथेत्तर साहित्य का सृजन किया है। रेणु का कथा-साहित्य अमर है और कथेत्तर साहित्य अद्वितीय। परन्तु उनकी कथेत्तर साहित्य की अपेक्षा उनकी कथा साहित्य की चर्चा अधिक हुई है। उनका कथेत्तर साहित्य सत्यानुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति है। रेणु ने कथेत्तर साहित्य के विभिन्न विधाएँ जैसे- रपट, रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, कविता, हास्य-व्यंग्य, गद्य-गीत, साक्षात्कार, निबंध एवं पत्र आदि को बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने विषय के रूप में दलित समाज, गरीबी, महामारी, बेकारी और शोषण में जर्जित मनुष्य को इनमें शामिल किया। रेणु का सम्पूर्ण कथेत्तर साहित्य उनके जीवन संकल्प 'सबार ऊपरे मानुष सत्य' का ही साकार रूप है।

लेकिन हम यहाँ मात्र रिपोर्ताजों में दलित चेतना की बात करेंगे? वैसे रेणु ने बाढ़, अकाल एवं युद्ध से सम्बंधित अनेक रिपोर्ताजों को लिखा है। साथ ही साथ लोक-जीवन, समाज-व्यवस्था, खेल, कृषि, रीति-रिवाज, संस्कार, आस्था, मनोरंजन (फिल्म) आदि विभिन्न विषयों पर महत्त्वपूर्ण रिपोर्ताजों की रचना की है। उदाहरण के तौर पर 'विदापत-नाच', 'हड्डियों का पुल', 'नए सवेरे की आशा', 'सरहद के उस पार', 'एकलव्य के नोट्स', 'पुरानी कहानी : नया पाठ', 'भूमि दर्शन की भूमिका' और 'पटना जल प्रलय' आदि। उनके रिपोर्ताजों की कुल संख्या सत्रह है जो अपने-आप में बेजोड़ है। इनमें निम्न वर्ग का जीवन सत्य, कृषि समस्या, अन्नाभाव, हिन्दु-मुसलमान एकता, राजनैतिक दाव-पेंच एवं टूटते परिवार का दर्द है। उनकी ये रिपोर्ताज किसी-न-किसी रूप में सर्वहारा और